रिकॉर्ड :– आज अंधेरे में हैं हम इनसान..... ओम् शांति। शूद्र वर्ण वाले मनुष्य पुकार रहे हैं, बुलाए रहे हैं परमपिता को; क्योंकि ज्ञान का सूर्य वो ही है ना। ज्ञान का नेत्र भी वो ही देते हैं। उनको शूद्र बुलाए रहे हैं। तुम ब्राह्मणों को तो सन्मुख मिला है, जो माँगते है वो देने लिए। बच्चे उस भोलानाथ के आगे झोली पसार बैठे हैं और वो सन्मुख आए झोली भर रहे हैं। कोई तो फुल झोली भर देते हैं ज्ञान रत्नों से। बच्चे तो अधिकारी हैं वरदान अथवा वर्सा लेने लिए। तो ये है सबकी पुकार और आज तुमको मिल रहे हैं। बाप झोली भर रहे हैं, जिस बाप के लिए दुनिया अब तक पुकार रही है। भगतों को कहा जाता है शूद्र वर्ण। फिर भगवान आकर मिलता है तो शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। गाया भी हुआ है कि परमपिता प० ने ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचे; क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा है तो ज़रूर ब्राह्मण रचेंगे ना! जैसे क्राइस्ट क्रिश्चियन को रचेंगे, बुद्ध बौद्धियों को रचेंगे, वैसे परमपिता प० ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचते हैं। ब्रह्मा भी रचना हो गई। रचना को रचता नहीं कहेंगे; क्योंकि उसका भी रचता दूसरा है। तो सबका क्रियेटर एक प० को कहा जाता है। वो पहले–2 कौन–सा धर्म स्थापन करते हैं; क्योंकि धर्म तो बहुत हैं ना। ये वैराइटी धर्मों का उल्टा झाड़ है। उनका बीज चेतन रचता है। आम का झाड़ हो तो कहेंगे, आम के ..... ने उनको रचा, वो बीज हो गया। परमपिता प० भी कहते हैं– मैं इस उल्टे वैराइटी मनुष्य सृष्टि झाड़ का चेतन बीज हूँ। उनको ही प० कहा जाता। परमपिता प० ही क्रियेटर है। पहले–2 कौन–सी रचना रचते हैं, ये कोई भी नहीं जानते। गाया हुआ है, ब्रह्मा मुख से ब्राह्मण वंशावली रची। ये हो गई मनुष्य सृष्टि की पहली–2 रचना। बाप सन्मुख बैठ समझाते हैं, जबकि बच्चे पुकारते हैं। भक्तों ने ही भगवान को पुकारा है। भक्तों ने कितना समय पुकारा है, ये भी भगत नहीं जानते कि कब से हम पुकारते आते हैं। सतयुग–त्रेता में तो सुख था। हम याद भी नहीं करते थे। ये भी किसको पता नहीं कि भक्ति कब आरम्भ हुई है। भगवान समझाते हैं, द्वापर से लेकर तुम भगत बने हो, दुखी बने हो तब बुलाना आरंभ किया है। भक्ति भी आधा कल्प पूरी चाहिए ना। वो बाप समझाते हैं, तुम आधा कल्प पुकारते आते हो अथवा जब आत्माएँ बहुत दुखी हुई हैं तब पुकारा है। गाया भी जाता है, आत्मा प० अलग रहे.....; क्योंकि जब रचना रची तो ब्रह्मा के औलाद हुए। उन औलाद की पालना भी ब्रह्मा को करनी है। भल करता शिव है; परन्तु कराते ब्रह्मा द्वारा है। खुद तो करन–करावनहार है ना। स्वर्ग में भी पालना विष्णु द्वारा कराते हैं। अब भी ब्रह्मा द्वारा ये मुखवंशावली रच, फिर उनकी पालना करावेंगे। जो रचता है वो ही मालिक बनेंगे। अब ब्रह्मा द्वारा सन्मुख बैठ राजयोग सिखाए रहे हैं राजाओं का राजा बनाने। इससे सिद्ध होता है कि अब सारी राजधानी स्थापन हो रही है। एक गीता ही है, जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म की राजधानी स्थापन करते हैं। वो आदि सनातन है ही सतयुग का धर्म। ज़रूर वो स्वर्ग स्थापन करने वाला क्रियेटर होगा। उनके लिए ही गाया जाता है– आत्माएँ प० अलग रहे बहुकाल... आत्मा एक नहीं, बहुत हैं। अब कितना समय अलग रहे, इसका बीज और झाड़ से हिसाब निकल आता है। जो पहले–2 सतयुग में आते हैं वो ही पिछाड़ी कलियुग में होंगे, वो ही पुराने बहुकाल से बिछुड़े हुए ठहरे। आगे तुम गाते थे, अब तो सद्गति देने वाला सत्गुरु मिला है। वो बाप भी है, नॉलेजफुल भी है। सभी उस भगवान को बुलाते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो कि हमको सन्मुख मिला है। कल अंधेरे में थे, आज बाबा ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। अब हम हैं, भगवान कह पुकार नहीं सकते; क्योंकि बाबा सन्मुख राजयोग सिखाए रहा है। ज़रूर सन्मुख तब समझावेंगे जबकि सतयुग आना होगा। बरोबर अब कलियुग का विनाश और सतयुग ...

का साक्षात्कार भी कराते हैं। कहते हैं, अब पुरुषार्थ करो। आधा कल्प जिन्होंने पुकारा है, वो ही आकर वर्सा लेंगे। बहुत समय से बिछुड़े हुए हैं देवताएँ। देवता धर्म का फाउंडेशन है भारत में। भारतवासी ही प० को पुकारते हैं। वो सदा सुख देने वाला है सदाशिव। वो तेरे सन्मुख बैठ राजयोग सिखाते हैं। और गुरु लोग तो हठयोगी हैं। बाप कहते हैं, मैं ही आए, राजयोग सिखाए, नर से ना० बनाता हूँ। अब देवताएँ होते हैं सतयुग में। तो ज़रूर कलियुग में आना पड़े। अब तुमको फिर से राजयोग सिखाने परमधाम से आया हूँ। ऐसे तो कोई सन्यासी आदि कह न सके, न वो और किसी के तन में आ सकते हैं। वह खुद ब्रह्मा तन में आकर फिर से राजाओं का राजा बनाने, गीता ज्ञान सुनाए रहे हैं। तुम फिर एक/दो को सुनाते हो। सतयुग में तो ये ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। वहाँ तो है ही पावन दुनिया। उस सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राज्य लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। इसमें समय भी लगता है। ऐसे नहीं, छूमंत्र से राजधानी स्थापन हो जाती है। ये भी हिसाब है। बहुत जन्मों के अंत में, मैं आकर प्रवेश करता हूँ, जबकि वो वानप्रस्थ अवस्था में है। 60 वर्ष बाद वानप्रस्थ अवस्था होती है। यहाँ से वानप्रस्थ की रसम चली है, जो 60 वर्ष में सब बच्चों को दे, खुद किनारा करते हैं। तो उस समय ही मैंने आकर इसमें प्रवेश किया। फिर गाया भी हुआ है कि ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष है। तो बाकी 40 वर्ष हुए। 100 वर्ष में रथ ही खलास हो जाएगा, तो फिर मैं क्या करूँगा? फिर तो मैं चला जाऊँगा। इन 40 वर्ष के अंदर ही सारा काम होना है। तुमसे पूछते हैं ना कि कितना समय पड़ा है? बोलो, तुम इस हिसाब से समझ नहीं सकते हो। शास्त्रों में थोड़ा–बहुत आटे में लूण, कुछ तो है ना। कहते हैं, ये ज्ञान प्रायःलोप है, बाकी 50% कुछ रहा है। तो ये हैं समझने की बातें। पहले ब्रह्मा से ब्राह्मण चाहिए, तो ब्रह्मा यहाँ होगा ना। सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा तो नीचे नहीं आएगा। बाप कहते हैं, मैं इनके बहुत जन्मों के अंत में आता हूँ। जो पूज्य सतोप्रधान था, वो अब तमोप्रधान, पुजारी, जड़जड़ीभूत अवस्था में है। बाबा–मम्मा पहले–2 बिछुड़े हुए हैं। अब फिर वो कंगाल बने हैं। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी सभी कौड़ी तुल्य हैं। तो अभी ब्रह्मा के 40 वर्ष पूरे नहीं हुए हैं। 10–12 वर्ष अजुन पड़े हैं। इस लड़ाई को बंद करने लिए भल कितने भी यत्न करें; परन्तु ठाह होगा नहीं। वो जब आपस में लड़े, तब तो माखन तुमको मिले। सो अब दैवी धर्म की स्थापना हो रही है। ये ब्राह्मण धर्म भी न रहेगा। फिर सतयुग आदि में देवी–देवता धर्म होगा। ब्राह्मणों के बाद है देवता धर्म। वहाँ और धर्म होते नहीं। तो ये भी हिसाब है ना। आत्माएँ प० अलग रहे..... तो 3½ सौ करोड़ आत्माओं में कौन पहले–2 बिछुड़े हैं और कितना समय बिछुड़े हैं। अब तुम बच्चे जानते हो कि पूरा कल्प हुआ है। तुम कहेंगे– बाबा, पूरा कल्प बाद फिर से आए मिले हैं। बेहद का बाप है हेविनली गॉड फादर तो ज़रूर हेविन का वर्सा देंगे। हेविन में देवी–देवता धर्म का राज्य था। फिर दो कला कम हुई। घर सदैव नया तो नहीं रहेगा ना। ये कितना अच्छा ड्रामा है। वो छोटे–2 ड्रामा बनाने वालों को भी समझाना है कि तुम ये छोटे–2 ड्रामा तो बनाते हो; परन्तु ये बेहद का ड्रामा, जो फिर से रिपीट होना है, उनके मु(ख्य) क्रियेटर, डायरैक्टर और प्रिंसिपुल एक्टर्स कौन हैं? ऊँच ते ऊँच तो है भगवान, फिर ब्र०वि०शं०, फिर जगतपिता–जगतअम्बा। सृष्टि रचने वाले तो चाहिए ना, तब तो सतयुगी सृष्टि की रचना हो। गाते हैं, तुम मात–पिता..... सुख घनेरे सतयुग में बच्चों को बहुत थे। सतयुग स्थापन करने वाला है ही परमपिता प०। उसने ही सुख घनेरे दिए; परन्तु कब? न सतयुग में, न कलियुग में; परन्तु संगमयुग पर आए दिए। अब तुम अनुभव से कहते हो– तुम मात–पिता..... हम आकर तेरे बालक बने हैं, आपके ज्ञान और योग से। हमको अथाह सुख

मिलते हैं। बाप कहते हैं, अच्छी रीत पुरुषार्थ कर सुख घनेरे लिओ। थोड़े सुख क्यों लेते हो? ल०ना० को सुख घनेरे थे, उन्हों की कितनी पूजा होती है। सभी से जास्ती खैंचने वाले हैं ल०ना० अथवा छोटेपन में रा०कृ०। इन्हों का ही नाम बाला है। बाल अवस्था बहुत लवली होती है। तुम बच्चों को भी बाबा कहते हैं, पूरा पुरुषार्थ करो। सिकीलधे बच्चे, जो बहुत काल से बिछुड़े हैं, उन्हों को ही बाप से वर्सा लेना है। श्रीमत पर चलना है। श्रीमत के सिवाय श्रेष्ठ पद कैसे मिलेगा। जो जितना श्रीमत पर चलते हैं वो ही श्रेष्ठ पद पावेंगे। कहते हैं, बहुत मीठे बच्चे बनो। आपस में खीर खण्ड होकर रहो। सतयुग में जनावर भी एक/दो को दुख नहीं देते। यहाँ तो एक मनुष्य एक बॉम्ब से कितने मरेंगे। हम जान गए हैं, बाबा को विनाश ज़रूर कराना है। सभी आत्माओं को ले जाना है। नई बात नहीं। बना–बनाया ड्रामा में चेंज नहीं हो सकती। तो तुम उन हद के ड्रामा वालों को भी समझाए सकते हो कि ये भी बेहद का अनादि ड्रामा है। इनको जान जाओ तो बहुत अच्छा बेहद का ड्रामा तुम बजाए सकते हो। तो उन ड्रामा वालों का भी कल्याण करना है। हम बाप के बच्चे हैं ही कल्याणकारी। (बह)न–भाइयों को वरदान देना है, जो अंधे के औलाद अंधे हैं। कहा जाता है– चैरिटी बिगन्स एट होम। मित्र–संबंधी कोई बहाने बनाए तो झट जाना चाहिए। जो रहमदिल होंगे वो तो झट सर्विस पर भागेंगे। बाप का परिचय देना तो बहुत सहज है। जैसे लौकिक बाप का परिचय देना होता है वैसे अब पारलौकिक बाप का परिचय देना है। मोस्ट इज़ी है। जब तक कोई सर्विस न करे तो उनको रहमदिल न कहेंगे। न अपन पर, न दूसरों पर रहम करते तो बाकी रहमदिल बाप का बच्चा बनकर किया ही क्या! खाली हाथ ताली बजाते गए। जो जानते ही नहीं उनपर तो कुछ दोष नहीं; परन्तु जो जान कर और खाली हाथ जाते हैं, उनपर रहम पड़ता है। अविनाशी ज्ञान रत्नों की झोली भर लेनी है जन्म–जन्मांतर के लिए। टोली तो रोज़ मिलती है। वो है अल्पकाल क्षणभंगुर सुख। ज्ञान रत्नों से है बेहद का सुख। जो सदैव बाबा की याद में रहते हैं वो बहुत मीठे, हर्षित मुख रहते हैं। कोई गाली देवे तो भी हर्षित मुख रहना चाहिए। ये तो बाबा भी कहते हैं कि एक्युरेट अंत में बनेंगे। अब भूलें तो सभी से होती हैं। माया बड़ी प्रबल है। ज्ञान सूर्य तो एक ही बाबा है। बाकी यहाँ सभी भक्तिमार्ग वाले हैं। शास्त्रों को ज्ञान नहीं कहा जाता है। ज्ञान कोई में, इस सृष्टि में हो नहीं सकता, जब तक संगमयुग न हो। बाकी जप,तप,तीर्थ आदि ये सभी हैं भक्तिमार्ग। बाप कहते हैं, मैं इन सभी से नहीं मिलता हूँ। जब तक संगमयुग न हो तब तक ज्ञान मिल नहीं सकता। ज्ञान देने वाला एक ही ज्ञान सागर है। बाकी सभी हैं जिस्मानी फिलॉसफी। रूहानी फिलॉसफी सिर्फ रूहों के बाप के पास है, जिसको स्प्रीचुअल गॉड फादर कहते हैं। बाकी सभी के पास है जिस्मानी नॉलेज। तीर्थ करो, धक्का खाओ। दूसरा, फिर जो भगत होकर गए हैं, उनकी महिमा है। भगत माल की महिमा है। ज्ञान माल, रुद्र माल को जानते नहीं। रुद्र को ही नहीं जानते। उनकी माला में पहले ब्र०वि०शं०, फिर हैं जगतपिता–जगतअम्बा ब्रह्मा की बेटी। फिर ब्राह्मणों की माला। यह रुद्र माला अभी बन रही है ब्राह्मणों की। पीछे फिर दैवी माला ल०ना० आदि की होगी। ज्ञान सूर्य आएगा तब तो ज्ञानवान बनेंगे, नहीं तो माला सिमरते–2 रहेंगे। ज्ञानमार्ग से भक्तिमार्ग छूट जाता है। अच्छा, बापदादा और माँ का सिकीलधे बच्चों प्रति गुडमॉर्निंग। ॐ

देखो, बच्चे अब कलियुग है, सभी पतित हैं। तो ज़रूर पावन बनने का वर्सा चाहिए। पावन बनाने वाला एक। उनका नाम सिर्फ उल्टा कर दिया है। राम कहने से त्रेता में चले जाते हैं। शिव कहें तो वो है सदा सुख देने वाला सदाशिव। तो बाप कहते हैं– देखो, माया ने काँटों का जंगल बनाए दिया है। अब इनको गार्डन बनाना है। अब तुम फूल बन रहे हो। जो मत पर चलेंगे वो फूल बनेंगे। उनकी मत है मनमनाभव, मुझे याद करो, माया रावण पर जीत पहनो। धनुष विकारों का तोड़ो, तो लक्ष्मी वा सीता को वरो। बाप आए है वर्सा देने। अब तो सभी दुखी, कंगाल हैं। रावण का श्राप लगा हुआ है। अब आकर वर लिओ बाप से। यहाँ भी देखो, कोई–2 वर लेते नहीं। माया कहाँ–2 ऐसा नाक से पकड़ती है जो पता नहीं पड़ता कि हम दैवी कुल को कलंक लगाते हैं। ऐसे भी बहुत हैं। नाम लेने से फंक हो जाएँगे। कहेंगे, बदनाम तो हो गए, और किया तो अब क्या है! ऐसे आश्चर्यवत् सुनन्ति..... वाले भी गाए हुए हैं। बाहर से तो बड़ा अच्छा फूल देखने आते हैं; परन्तु बाबा जानते हैं, बड़े काँटे हैं। अमृत पीते जो ट्रेटर बनते तो बड़ा नुकसान करते हैं। चलते–2 कोई काम वश गंदे हो पड़ते हैं। फिर कोई धर्मराज से डरते हैं तो लिख भी देते हैं– धर्मराज बाबा, हमसे भूल हुई है, क्षमा करना। कोई तो छिपाए लेते हैं। उसका नुकसान भी उसको होता है और माया खाना खराब कर देती है। ऐसे कई फूल बनते–2 काँटे बन जाते। माया बड़ी प्रबल है। यह भी बॉक्सिंग है। राम उस्ताद है तो रावण भी कम उस्ताद नहीं। ब्राह्मण कुल भूषण को भी गिराए देती, फिर ब्राह्मण कुल में बहुत हाहाकार हो जाता है। काँटों के जंगल में बैठे–2 दैवी फूलों का बगीचा बनाने में बड़ी मेहनत लगती है। आखिर तो बगीचा बन ही जाता है। गाया भी जाता है, पाण्डव बहुत खीर खंड हो रहते थे। तो अपन को देखना है कहाँ ....., कोई से घृणा तो नहीं है। जितना हो सके एक/दो को समझाना है। कब भी किसी के दिल को दुख नहीं देना है। सभी को राज़ी करना है वो भी युक्ति से। ऐसे नहीं, अपने .... भी उनको दे देने हैं। दान भी पात्र को देना होता है। असुर को तो दे नहीं सकते। हम ईश्वरी(य) संतान हैं, तो आसुरी संतान को युक्ति से ईश्वरी(य) संतान बनाना है; जैसे हम बने हैं। ईश्वरी(य) संतान में कोई अवगुण न होना चाहिए। कोई काम–क्रोध–लोभ वश न हों। कर्म–इन्द्रियाँ भी बड़ी शैतान हैं। इन संस्कारों को बदलना है। मोस्ट बिलवेड बाप की याद में रहना है। अवगुण दिखाए बाप का नाम बदनाम नहीं करना है। सतगुरु का निंदक ठौर न पावे। तुमको ठौर का पता भी है, बरोबर हम सूर्यवंशी–चंद्रवंशी बनते हैं। और गुरु लोग तो बहुत डराते हैं कि श्राप देंगे तो ठौर न मिलेगी; परन्तु उनसे तो कोई ठौर नहीं मिलती। कुछ भी एम–ऑब्जेक्ट का पता नहीं। गुरु तो जैसे बड़े असुर हैं। इन जैसा पाप आत्मा आए नहीं। इसलिए बाप कहते हैं– जब सतगुरु मिला, तो कलियुगी गुरुओं का आधार क्यों लेते हो? तुम बच्चे तो वर्सा पाए रहे हो। हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ